इकाई 1 अनुवाद : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति

1.2.1 'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति

1.2.2 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति

1.2.3 व्युत्पत्ति के आधार पर 'अनुवाद' और 'Translation' शब्दों में समानता–भेद

1.3 'अनुवाद' और 'Translation' का अर्थ

1.4 पारिभाषिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द की विकासयात्रा

1.4.1 संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग

1.4.2 हिंदी साहित्य में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग

1.4.3 हिंदीतर भाषाओं में 'अनुवाद' शब्द के पर्याय

1.5 'अनुवाद' और 'रूपांतर'

1.6 अनुवाद की परिभाषा

1.6.1 प्रमुख अनुवाद–चिंतकों द्वारा दी गई परिभाषाएँ

1.6.2 प्रमुख साहित्यकार–अनुवादकों द्वारा दी गई परिभाषाएँ

1.7 अनुवाद का संदर्भ

1.7.1 अनुवाद का व्यापक संदर्भ

1.7.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ

1.8 सारांश

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.10 उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 'अनुवाद' और 'Translation' की व्युत्पत्ति और अर्थ को समझ सकेंगे;
- पारिभाषिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द की विकासयात्रा को जान सकेंगे;
- प्रमुख अनुवाद सिद्धांत–चिंतकों और साहित्यकार–अनुवादकों द्वारा अनुवाद के बारे दी गई परिभाषाएँ बता सकेंगे; और
- अनुवाद के व्यापक एवं सीमित संदर्भ को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

बहुभाषिकता की स्थिति ने अनुवाद की जरूरत को जन्म दिया है। विभिन्न भाषाओं में संवाद स्थापित करने वाली प्रक्रिया 'अनुवाद' आधुनिक युग की अपरिहार्य जरूरत है।

ज्ञान–विज्ञान के सभी अनुशासनों, सभी भाषा–भाषी समुदायों–समाजों के बीच भाषाई संवाद कायम करने का माध्यम 'अनुवाद' वास्तव में विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करता है। अनुवाद एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना है। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि क्या अनुवाद का यही अर्थ है? क्या 'अनुवाद' का प्रारंभिक अर्थ भी वही था, जिस अर्थ में इसे आज व्यवहार में लाया जा रहा है। इसलिए अनुवाद के अर्थ और उसकी परिभाषाओं पर विचार जरूरी है।

अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के लिए हिंदी में आम तौर पर 'अनुवाद' शब्द को प्रयोग किया जाता है, इसलिए प्रस्तुत इकाई में इन दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति, इनके अर्थ और परिभाषाओं पर अलग–अलग विचार किया जा रहा है। इसके साथ–साथ, पारिभषिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द की विकास–यात्रा से भी परिचित कराया जा रहा है। इस इकाई में अनुवाद के सीमित और व्यापक संदर्भ को भी अध्ययन का विषय बनाया गया है।

1.2 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति

अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के लिए हिंदी में 'अनुवाद' शब्द को प्रयुक्त किया जाता है। इनके अर्थ को जानने से पहले इनकी व्युत्पत्ति पर विचार करना जरूरी है। व्युत्पत्ति की अवधारणा में 'विश्लेषण करके अर्थ के स्पष्टीकरण' का भाव निहित होता है। किसी भी शब्द–विशेष की व्युत्पत्ति के बारे में जानकर उस शब्द का मूल अर्थ देते हुए पूरा परिचय दिया जाता है। इसलिए शब्द–विशेष की व्युत्पत्ति के जरिए उसके अर्थ की जानकारी मिल जाती है। यही कारण है कि किसी भी अवधारणामूलक शब्द के अर्थ और स्वरूप पर विचार करते समय सबसे पहले उसकी व्युत्पत्ति की चर्चा की जाती है।

इकाई के इस भाग में 'अनुवाद' तथा 'Translation' शब्द की परिभाषा और अर्थ पर विचार किया जा रहा है। इस संदर्भ में सबसे पहले इन दोनों की व्युत्पत्ति के बारे में जानकारी हासिल करना उपयोगी सिद्ध होगा। आइए, हम यह जानें कि इनकी व्युत्पत्ति कैसे हुई और व्युत्पत्ति के आधार पर इनका अर्थ क्या है।

1.2.1 'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति

'अनुवाद' संस्कृत का शब्द है। यह 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना शब्द है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार इसे मूलतः संस्कृत की 'वद्' धातु से विकसित शब्द कहा जाता है। संस्कृत की इस 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगने से 'वाद' शब्द बना है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार, जब किसी धातु अथवा मूल शब्द में 'घञ्' प्रत्यय जुड़ता है तो वह 'आ' स्वर को मात्रा में बदलकर उससे पहले के व्यंजन (अर्थात अक्षर) के साथ जुड़ जाता है। इस तरह, जुड़ने के बाद यह प्रत्यय मूल शब्द को भाववाचक संज्ञा बना देता है। इस प्रकार, 'वद्+घञ्=वाद' शब्द बना। 'वाद' शब्द से पहले 'अनु' उपसर्ग जोड़ने पर 'अनुवाद' (अनु+वाद) शब्द बन जाता है।

स्पष्ट है कि 'अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति 'अनु'+'वाद' शब्द से हुई। आम तौर पर 'अनु' उपसर्ग 'पीछे' अथवा 'बाद में' आदि अर्थों का सूचक है। भाववाचक संज्ञा 'वाद' का अर्थ है – 'कथन', 'विचार', 'बोलना', 'भाषण' आदि। इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है – 'अनुकथन' या किसी के द्वारा कहने के बाद उसी बात को दोबारा अधिक स्पष्ट करते हुए कहना अथवा पुनःकथन अथवा पुनरुक्ति। 'अनुवचन',

'अनुवाक्', 'पश्चात्कथन', 'टीका', 'भाषानुवाद', 'आवृत्ति', 'सार्थक आवृत्ति' आदि शब्दों को 'अनुवाद' शब्द के पर्याय के रूप में देखा जाता है। इसका कारण यह है कि पीछे/दोबारा बोलने (पुनरुक्ति) में भाषा रूपांतरित हो जाती है और इस प्रकार पहले की कही हुई बात का अनुवाद हो जाता है।

भारतीय शिक्षा पद्धति मौखिक परंपरा रही है और प्राचीनकाल में गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। गुरुकुल में गुरु जो कुछ बोलते या श्लोक या मंत्रों का उच्चारण करते थे, शिष्य उन कथनों को गुरु के पीछे–पीछे दोहराते थे। यानी वे गुरु के शब्दों की बारंबार पुनरुक्ति करते थे। इसी को अनुवाद, 'अनुवचन' या 'अनुवाक्' कहा जाता था। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'अनुवाद' शब्द का अर्थ है – एक बार कही गई बात को दोहराना या पुनर्कथन।

1.2.2 'Translation' शब्द की व्युत्पत्ति

हिंदी में प्रयुक्त होने वाला 'अनुवाद' शब्द, अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के अर्थ में विकसित हो चुका है और आजकल इसी के समतुल्य माना जाता है। यद्यपि आज हम इस 'अनुवाद' शब्द को जिस अर्थ–संदर्भ में ग्रहण करते हैं, वह संस्कृत में प्रयुक्त 'अनुवाद' शब्द के अर्थ से कुछ भिन्न है। अर्थ की इस भिन्नता पर हम इस इकाई में आगे भाग 1.3 में अलग से चर्चा करेंगे। अंग्रेजी के इस 'Translation' शब्द के लिए अन्य यूरोपीय भाषाओं में अलग–अलग शब्द मिलते हैं। जैसे, Traduire (फ्रांसीसी), Translare (इतालवी), Traduzir (पुर्तगाली), Traduce (रोमानियाई), Trasladur (स्पेनी), Upersetzen (जर्मनी), Lefordete (हंगेरियाई), Salin (मलय), T'ungi. Fan-i (चीनी), Perevode (रूसी) आदि।

'Translation' शब्द अंग्रेजी के 'to translate' क्रिया का संज्ञा रूप है। इस 'Translate' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'Translatum' से हुई, जो Trans+latum से मिलकर बना है। इस पूर्वपद (उपसर्ग) Trans का अर्थ है – beyond, through, across (उस पार या दूसरी ओर); तथा latum (lattion) का अर्थ है – to carry (ले जाना)। इस तरह, व्युत्पत्ति के आधार पर 'Translatum' अथवा 'Translation' शब्द का एक ही अर्थ है – पारगमन या दूसरी ओर ले जाना।

'Translation' शब्द कई अर्थ–छटाओं का उद्घोषक है। भारत के श्रेष्ठ अनुवाद सिद्धांतकार श्री आर.रघुनाथ राव ने अपनी कृति *The Art of Translation – A Critical Study'* में 'Translation' शब्द की निम्नलिखित आठ अर्थ–छटाओं की सोदाहरण चर्चा की है :

1) Removal or transference of a physical object (किसी भौतिक वस्तु का विलोपन अथवा स्थानांतरण)

2) Removal or transference of a man from one office or change to another (किसी व्यक्ति का एक कार्यालय अथवा दायित्व से दूसरे कार्यालय अथवा दायित्व में परिवर्तन)

3) Transference to heaven or to another world (स्वर्गिक अंतरण अथवा लोकांतरण)

4) Alternation or change (रूप परिवर्तन अथवा बदलाव)

5) Transformation or change of appearance (रूप में परिवर्तन अर्थात रूपांतरण)

6) Art or process of changing words to express the sense of a passage in another language (एक भाषा में लिखे पाठ के भावार्थ को अन्य भाषा के समानार्थी प्रतीकों में बदलने की कला अथवा प्रक्रिया)

7) Explanation or interpretation (व्याख्या अथवा अर्थ निर्धारण)

8) Version (संस्करण, जिसे अन्य भाषा में तैयार किया जाता है, रूपांतरण)

संस्कृत–अंग्रेजी कोशकार वी.एस. आप्टे ने व्युत्पत्ति सहित 'Translation' शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की है – (1) Repetition (in general) (सामान्य रूप से आवृत्ति), (2) Repetition by way of explanation, illustration or corroboration (व्याख्या, उदाहरण अथवा समर्थन की दृष्टि से आवृत्ति); (3) Explantory repretition or reference to what is already mentioned, particularly any portion of the Brahmans which comments on, illustrates or explains a VIDHI or direction previously laid down and which does not itself lay down any direction (पूर्वकथित बात का उल्लेख, विशेष रूप से ब्राह्मण–ग्रंथों का वह भाग जिसमें पूर्वोक्त निदेश अथवा विधि की व्याख्या, चित्रण या फिर उसकी टीका–टिप्पणी निहित है एवं जो स्वयं कोई विधि या निदेश नहीं है), (4) Corroboration (समर्थन); (5) Report (विवरण), (6) Rumour (अफवाह); एवं (7) अनुवाद (Translation)।

ध्यान देने की बात यह है कि 'Translation' के जरिए यह 'दूसरी ओर ले जाना' की अवधारणा को जब हम भाषिक पाठ से जोड़कर देखते हैं तो यह 'Translation' शब्द एक भाषिक पाठ को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना, ले जाना या संप्रेषित करना के अर्थ का वाचक बन जाता है।

व्युत्पत्ति के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'Translation' शब्द का अर्थ है – एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में ले जाना, संप्रेषित करना या प्रस्तुत करना।

1.2.3 व्युत्पत्ति के आधार पर 'अनुवाद' और 'Translation' शब्दों में समानता–भेद

संस्कृत के 'अनुवाद' और अंग्रेजी के 'Translation' शब्दों की व्युत्पत्ति के बारे में की गई चर्चा से स्पष्ट है कि 'अनुवाद' शब्द का अवधारणामूलक अर्थ बताता है कि इसमें एक बार कही गई बात को दोहराने या पुनर्कथन का भाव निहित है। यह दुहराना या पुनर्कथन केवल शब्द तथा शब्द–रूपों का सामान्य दोहराना मात्र न होकर अर्थ के दोहराए जाने का संकेत है क्योंकि वह पूर्वकथन के अनुसार, उससे मिलता–जुलता, उसपर आधारित या फिर उसके अर्थ के स्पष्टीकरण करने वाला व्याख्यात्मक वचन होता है। इतर (दूसरी) भाषा में अंतरण का द्योतक आधुनिक अर्थ तब तक इसमें व्याप्त नहीं था। इसलिए 'अनुवाद' उसी भाषा में पुनरुक्ति, व्याख्या या स्पष्टीकरण का द्योतक रहा। यही कारण है कि आधुनिक अर्थ में (यानी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की तुलना में) 'अनुवाद' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ भले ही दूर दिखाई पड़ता हो, किंतु इसके मूल में शब्द तथा शब्द–रूपों का सामान्य दोहराना मात्र न होकर अर्थ के दोहराए जाने का संकेत निहित है। इसलिए आधुनिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द वास्तव में 'Translation' शब्द के अर्थ से भिन्न नहीं है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि व्युत्पत्तिमूलक अर्थ के आधार पर दोनों दृष्टियों में मौलिक भेद नहीं है। 'अनुवाद' में

अर्थ को दोहराने का भाव निहित है और 'Translation' में एक भाषा में व्यक्त अर्थ (कथ्य) को दूसरी भाषा में व्यक्त करने (ले जाने) का भाव है।

1.3 'अनुवाद' और 'Translation' का अर्थ

'अनुवाद' और 'Translation' शब्दों की व्युत्पत्ति और उसके आधार पर दोनों में समानता एवं अंतर के बारे में जानने के बाद आइए अब हम इन दोनों शब्दों के अर्थ के बारे में विचार करें। इस संदर्भ में पहले कोशगत अर्थ पर विचार करेंगे।

'Translation' शब्द का कोशगत अर्थ : अंग्रेजी कोश के अनुसार 'Translation' शब्द का सीधा अर्थ है – एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अथवा एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना। 'वेबस्टर डिक्शनरी' के अनुसार 'Translation' का अर्थ है – *Translation is rendering from one language or representational system into another. Translation is an art that involves the recreation of a work in another language for readers with a different background.'* (अर्थात "एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण या प्रतिनिधित्व की प्रणाली अनुवाद है। यह ऐसी कला है जिसमें एक भिन्न पृष्ठभूमि वाले पाठकों के लिए किसी रचना का किसी और भाषा में पुनःसृजन होता है।")

अंग्रेजी ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भी 'Translation' शब्द का यही अर्थ मिलता है। इस डिक्शनरी के अनुसार, *' Translation : the act or an instance of translating, a written or spoken rendering of the meaning of a word, speech, book etc. in another language'.* (अर्थात "अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण है। किसी एक भाषा के शब्द, कथन, पुस्तक आदि का दूसरी भाषा में लिखित या मौखिक प्रस्तुतीकरण है।")

लैक्सिन यूनिवर्सल एनसाइक्लोपीडिया में 'Translation' का अर्थ इस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है – *Translation theory refers to a general framework of principles and procedures that have been formulated to assist the translator. Using this approach, the translator analyzes the original text in relation to the author's purposes and determines whether the predominant language-function of the text is imperative, informative, persuasive, or expressive. The style and the variety of the language are examined and the quality of the writing assessed.'* ('अनुवाद सिद्धांत से संबंधित है जिसमें अनुवाद की सहायता को ध्यान में रखते हुए सिद्धांतों और प्रक्रियाओं की सामान्य संरचना निर्मित है। इन्हें काम में लाते हुए अनुवादक, लेखक के उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में मूल कृति का संवीक्षण करता है और यह निर्धारित करता है कि कृति की भाषा का प्रमुख संदेश आदेशात्मक है, सूचनात्मक है, अभिप्रेरक है या अभिव्यंजनामूलक। इसमें भाषा की शैली एवं विविधता का परीक्षण और लेखन की गुणवत्ता का मूल्यांकन होता है।')

'Translation' शब्द के विभिन्न कोशगत अर्थों को जानने के पश्चात यह स्पष्ट अभिमत उभरता है कि 'Translation' शब्द से अभिप्राय है – एक भाषा से दूसरी भाषा में सामग्री का प्रस्तुतीकरण। अंग्रेजी के इस 'Translation' शब्द के कोशगत अर्थ को जानने के बाद आइए अब हम 'अनुवाद' शब्द के कोशगत अर्थ को जानें।

'अनुवाद' शब्द का कोशगत अर्थ : शब्दार्थ चिंतामणि कोश में अनुवाद के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ को लिया गया है। इसके अनुसार अनुवाद *'प्राप्तस्य पुनः कथने'* और *'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने'* अर्थात पहले से कहे गए अर्थ को पुनः कहना या फिर ज्ञान अर्थ को प्रतिपादित करना है।

कालिका प्रसाद द्वारा संपादित 'बृहत् हिंदी कोश' में अनुवाद के अर्थ इस प्रकार मिलते हैं – फिर से कहना, व्याख्या या समर्थन रूप में पुनरुक्ति, समर्थन, अपशब्द, उल्था, भाषांतर। भार्गव हिंदी शब्दकोश में अनुवाद का अर्थ इस प्रकार दिया गया है – पुनरुल्लेख, दोहराव, अनुकरण, निंदा, भाषांतर आदि।

'अनुवाद' और 'Translation' का अर्थ–संदर्भ/निहितार्थ

'अनुवाद' और 'Translation' शब्दों की व्युत्पत्ति के आलोक में यदि इनके शाब्दिक अर्थ पर विचार किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 'अनुवाद' में अर्थ के दोहराने का भाव निहित है तो 'Translation' में अर्थ को एक भाषा से दूसरी भाषा में ले जाने का संकेत है। इसीलिए यह स्वीकार किया जाता है कि इनके शब्दार्थ में तात्विक अंतर नहीं है और दोनों के मूल में एक ही भाव निहित है – 'एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना'।

मुख्य बात यह भी 'अनुवाद' और 'Translation', दोनों ही शब्दों में अनुवाद के 'विषय' पर बल दिया गया है। 'विषय' के अंतर्गत मुख्य रूप से एक भाषा में व्यक्त किए गए अर्थ–भाव, विचार, संवेदना आदि को शामिल किया जाता है। इस तरह, अनुवाद (Translation) एक भाषा में व्यक्त भाव, विचार, अर्थ, संवेदना को दूसरी भाषा में व्यक्त करना है। इस तरह, अनुवाद में कथ्य या संदेश अपरिवर्तनीय होता है और केवल भाषा के स्तर पर परिवर्तन होता है। यही कारण है कि अनुवाद को दो भाषाओं के बीच संपन्न होने वाला कर्म कहा जाता है।

जिस मूल भाषा में बात (कथ्य) कही हुई होती है या जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे 'स्रोत भाषा' (Source Language – SL) और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे 'लक्ष्य भाषा' (Target Language - TL) कहा जाता है। इन दोनों शब्दों को पारिभाषिक रूप में ग्रहण कर इनका प्रयोग करते हुए 'अनुवाद' के बारे में कहा जा सकता है कि **'अनुवाद, स्रोत भाषा में व्यक्त कथ्य (अर्थ) को लक्ष्य भाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया है।'**

लेकिन, एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण की यह प्रक्रिया सरल न होकर, बड़ी जटिल होती है। इस जटिलता के मुख्य रूप से विशिष्ट भाषागत, सामाजिक–सांस्कृतिक और शैलीगत कारण होते हैं। प्रत्येक भाषा की संरचना अपने में विशिष्ट होती है। ध्वनि, शब्द, अर्थ–प्रसंग, उच्चारण, लय, वाक्य–संरचना, मुहावरे–लोकोक्तियाँ, अभिव्यक्ति आदि के संदर्भ में कोई भी दो भाषाएँ समान नहीं होती हैं। उनका सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ और मान्यताएँ भी भिन्न तथा विशिष्ट होती हैं। इसके साथ–साथ, एक भाषा–समाज की जीवन और जगत को देखने की दृष्टि और उन्हें भाषा में व्यक्त करने का ढंग दूसरे समाज से विशिष्ट होता है। इसके अलावा, एक ही तथ्य अथवा यथार्थ को व्यक्त करने का अंदाज भी सभी भाषाओं में एकसमान नहीं होता है। इसलिए एक भाषा में व्यक्त अर्थ और इस वैशिष्ट्य को दूसरी भाषा में व्यक्त करना मुश्किल होता है। प्रत्येक भाषा के भाषिक वैशिष्ट्य को उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हिंदी के 'कहो',

'कहिए', 'कहिएगा' शब्दों के लिए अंग्रेजी की अभिव्यक्ति 'to say' से हिंदी के इन शब्दों में निहित सूक्ष्म अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाएगी। इस भाषिक वैशिष्ट्य को समझने के लिए हिंदी के निम्नलिखित वाक्यों को भी देखा जा सकता है :

1. आज वह बहुत खुश है।
2. आज वह बेहद खुश है।
3. आज उसके खुशी के मारे पैर जमीन पर नहीं टिक रहे।
4. आज वह खुशी में उड़ रहा है।

अगर उक्त सभी वाक्यों में निहित अर्थ पर गौर करें तो हम यह पाते हैं कि इन सभी वाक्यों का मुख्य अर्थ लगभग समान है और उनमें खुशी की अभिव्यक्ति हुई है। किंतु गौर करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सभी वाक्यों में अर्थ के स्तर पर सूक्ष्म अंतर है। इसलिए उक्त सभी वाक्य मोटे तौर पर समानार्थी होने के बावजूद सूक्ष्म अर्थ में समान नहीं हैं। ये सभी वाक्य अपने प्रभाव और प्रकृति में एक–दूसरे से भिन्न हैं। इसलिए इन वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद करने में कठिनाई होगी। सभी वाक्यों में 'खुशी' शब्द के लिए एक ही समतुल्य प्रयुक्त नहीं हो सकेगा।

कहने का अभिप्राय यह है कि स्रोत भाषा की अभिव्यक्तियों के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य अभिव्यक्तियाँ खोजना कोई सरल कार्य नहीं होता है। ऐसी स्थिति में व्यंजित अर्थ की समतुल्य अभिव्यक्ति के लिए अनुवाद के दौरान लक्ष्य भाषा में कुछ जोड़ना अथवा छोड़ना पड़ जाता है। इसके बावजूद यह जरूरी नहीं कि अनूदित रचना मूल के समतुल्य एवं समानार्थक हो ही। इसलिए अनुवाद के संदर्भ में यह स्वीकार किया जाता है कि अनुवादक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच तालमेल बैठाता है। इस तालमेल को स्थापित करते हुए वह दो भिन्न भाषा–समुदायों के बीच संवाद स्थापित करता है, भाषा–सेतु बंधन का काम करता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि अनुवाद दो भिन्न भाषा–समुदायों के बीच संवाद स्थापित करने की अवधारणा है।

1.4 पारिभाषिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द की विकासयात्रा

'अनुवाद' शब्द प्राचीन समय से ही व्यवहार में प्रयुक्त होता रहा है। संस्कृत में 'भाष्य' और 'टीका' शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। वहीं, संस्कृत से जन्मी हिंदी के ऐतिहासिक विकासक्रम में हमें 'भाषा अथवा भाखा', 'तर्जुमा' और 'उल्था' शब्दों के प्रयोग नजर आते हैं। इसलिए हिंदी भाषा के उद्‌भव और विकास के आलोक में 'अनुवाद' शब्द की यात्रा पर नजर दौड़ाना उपयुक्त होगा। इस संदर्भ में सबसे पहले हम संस्कृत साहित्य में 'अनुवाद' शब्द के प्रयोग पर विचार करते हैं।

1.4.1 संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग

वैदिक साहित्य और उसके परवर्ती संस्कृत साहित्य में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग अनेक स्थलों पर देखा जा सकता है। ऋग्वेद में जगदीश्वर को समस्त विद्याओं का अनुवाद करने वाला कहते हुए 'अनुवदति' शब्द का प्रयोग किया गया है। (2.13.3) यह शब्द–प्रयोग संकेत करता है कि सृष्टि के विकास के समय से ही अनुवाद की आवश्यकता महसूस की गई और तब से अनुवाद किसी न किसी रूप में निरंतर चला आ रहा है।

ऋग्वेद के अतिरिक्त, संस्कृत के अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी 'अनुवाद' शब्द का वर्णन मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण में अनुवाद का वर्णन 'अनुब्रयाद' अर्थात पुनःकथन के अर्थ में हुआ है। (2.15) इसके अलावा, मैत्रायणी संहिता, कृष्ण यजुर्वेदीया में भी 'अनुवदति' शब्द आया है। (1.11.6) इसके अतिरिक्त, न्याय दर्शन (2.65) में भी इस शब्द के प्रयोग को देखा जा सकता है, जहाँ वाक्य के तीन भेदों में से एक भेद को 'अनुवाद वाक्य' कहा गया है। न्यायसूत्र में अनुवाद को व्याख्यायित करते हुए कहा गया है कि विधि तथा विहित (ज्ञात) का अनुवचन करना यानी उसे फिर से कहना अनुवाद है – *'विधि विहितस्यानुवचनमनुवादः'*। शब्दार्थ चिंतामणि कोश में अनुवाद के व्युत्पत्तिमूलक अर्थ – *'प्राप्तस्य पुनः कथने'* और *'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने'* अर्थात पहले से कहे गए अर्थ को पुनः कहना या फिर ज्ञात अर्थ को प्रतिपादित करना – को लिया गया है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ऋग्वेद तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों (जैसे, ऐतरेय ब्राह्मण, मैत्रायणी संहिता, कृष्ण यजुर्वेदीया, वृहदारण्यक उपनिषद, यास्क रचित निरुक्त, भर्तृहरि, न्यायसूत्र, जैमिनीय न्यायमाला, न्यायसूत्र आदि) में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग दोबारा कहने के अर्थ में भी हुआ है।

'भाष्य' शब्द प्रयोग : अपनी इस यात्रा में परवर्ती यानी 'लौकिक संस्कृत काल' के दौरान वैदिक साहित्य की 'भाष्य' परंपरा को भी 'अनुवाद' कहा जा सकता है। 'भाष्य' में मूल पाठ की उसी भाषा में स्पष्ट व्याख्या की जाती है। संस्कृत में भाष्य की सुदीर्घ परंपरा है। वेदों का सर्वप्रथम भाष्य 'ब्राह्मण' ग्रंथों में मिलता है, जिसमें मूल रूप से यज्ञ संबंधी विधियों को केंद्र में रखते हुए वेद–मंत्रों की व्याख्या की गई। आर्ष ग्रंथों (वेदों) की व्याख्या को 'भाष्य' कहा जाता है। इसमें अनुवादक मूल की बातों को उसी भाषा में विस्तार से समझाता है, उसकी व्याख्या करता है। इस तरह अनुवादक अपने अनूदित पाठ को उसी भाषा में सहज–सुबोध बनाने का प्रयास करता है। मूल का 'भाष्य' करने के मूल में पाठक के बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखना रहता है। ऋग्वेद का भाष्य करने वाले व्याख्याता के रूप में सायणाचार्य विशेष रूप से विख्यात हैं।

'टीका' शब्द प्रयोग : 'भाष्य' की भाँति 'टीका' के अंतर्गत भी मूल पाठ की उसी भाषा में स्पष्ट व्याख्या का भाव निहित है। संस्कृत के कालजयी ग्रंथों की व्याख्या को 'टीका' कहा जाता है। संस्कृत में टीकाओं की सुदीर्घ परंपरा रही है। उदाहरण के लिए, कालिदास कृत 'कुमारसंभव' की, मल्लिनाथ की टीका।

'भाष्य' और 'टीका' के आधार : 'पद–पाठ' और 'निरुक्ति' : 'भाष्य' और 'टीका' में आम तौर पर 'पद–पाठ' और 'निरुक्ति' को आधार बनाया जाता था पद–पाठ के अंतर्गत संहिताबद्ध वेद–मंत्रों को अलग–अलग किया जाता था। इस प्रक्रिया में वेद–मंत्रों के पदों का संधि–विच्छेद, उपसर्ग तथा उदात्तादि स्तरों पर प्रकाश डालना 'पद–पाठ' का हिस्सा रहता था। वहीं, 'निरुक्ति' के अंतर्गत किसी शब्द का धातु–विशेष या फिर अनेक धातुओं के साथ संबंध स्थापित करके उसका अर्थ निर्धारित किया जाता है। वेद–मंत्रों का सांगोपांग विवेचन कर व्याख्या करने वाली इस प्रक्रिया को कतिपय विद्वानों ने 'निर्वचन' भी कहा है। वैसे, इस चर्चा से यह तो स्पष्ट रूप से पता चलता है कि भाष्य अथवा टीका के द्वारा मूल भाषा पाठ की उसी भाषा में व्याख्या प्रस्तुत किए जाने की परंपरा रही है, न कि किसी अन्य भाषा में।

इस प्रकार, वैदिक साहित्य के अर्थ–बोधन के लिए भाष्य या टीका के द्वारा मूल पाठ के प्राण–तत्व को एक अन्य 'विधा' स्वरूप में प्रतिष्ठित करने की परंपरा का बीजवपन किया, उसका फल 'अनुवाद' के रूप में नजर आता है। यद्यपि मूल भाषा में ही

व्याख्या प्रस्तुत करने के कारण 'भाष्य' अथवा 'टीका' की ये पद्धतियाँ 'अनुवाद' शब्द के आधुनिक अर्थ के अंतर्गत समाहित नजर नहीं आती हैं किंतु साहित्य की इन विधाओं ने वर्तमान अनुवाद के रूप के निर्माण के लिए आधार का काम किया। वैसे, इतना तो अवश्य है कि इस 'अनुवाद' शब्द ने एक लंबी यात्रा तय करके अपने वर्तमान अर्थ को प्राप्त किया है।

स्पष्ट है कि शुरू में हिंदी में भी 'अनुवाद' शब्द को संस्कृत शब्द के अर्थ–प्रसंग में ही लिया जाता रहा। इसलिए इसके पर्याय 'अनुवचन', 'अनुवाक्', 'अनुकथन', 'पश्चात्कथन', 'भाषानुवाद', 'टीका', 'आवृत्ति' आदि प्रचलित हुए।

1.4.2 हिंदी साहित्य में 'अनुवाद' शब्द प्रयोग

हिंदी साहित्य में 'Translation' के अर्थ में विशेष तौर पर 'भाषा', 'तर्जुमा', 'उल्था' और 'अनुवाद' शब्दों का व्यवहार किया जाता है। इनपर विस्तार से चर्चा अपेक्षित है।

'भाषा' अथवा 'भाखा' शब्द प्रयोग : संभावना यह भी है कि यह 'भाषानुवाद' शब्द के संक्षिप्त रूप के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता रहा है। 'भाषानुवाद' का अर्थ है – 'किसी अन्य भाषा में कही गई बात को बोलचाल की प्रचलित भाषा में कहना।' भाषानुवाद के अलावा, इसे 'छाया', 'व्याख्या', 'टीका', 'भाषा', 'भाषा बनाना' अथवा 'भाषा में करना' भी कहा जाता था। 'भाषा' को 'भाखा' भी कहने की परंपरा रही है। यहाँ यह उल्लेख करना अनुचित न होगा कि 'भाषा' अथवा 'भाखा' शब्द को साहित्येतर भाषा के लिए व्यवहार में लाया जाता था। कहने का अभिप्राय यह है कि उस समय के भारत की साहित्यिक भाषाओं (अर्थात संस्कृत, प्राकृत, और अपभ्रंश) से भिन्न जनसामान्य की भाषा के लिए इसका प्रयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, संस्कृत के प्रतिष्ठित रचनाकार भवभूति की नाट्य–रचना 'मालती–माधव' का अनुवाद रीतिकालीन रीति–कवि आचार्य सोमनाथ (संवत् 1760–1815) ने किया। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि अपने आश्रयदाता के आग्रह पर उन्होंने इसका 'माधव–विनोद' के नाम से 'भाषा' बनाई अर्थात नाट्यानुवाद किया :

कही बहादुर सिंह ने, एक दिना सुख पाई।
सोमनाथ या ग्रंथ की, भाषा देहु बनाइ।।

इसी प्रकार, लल्लूजी लाल का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिनकी फोर्ट विलियम कॉलेज में 'भाखा मुंशी' के रूप में नियुक्ति हुई थी। एक अन्य उदाहरण हिंदी साहित्य के आधुनिककाल के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) के काव्य का दिया जा सकता है जिसमें उन्होंने लिखा है :

भागवत दशम स्कंद भाषा, अति पवित्र सुभाइकै।
यह नब्यौं अध्याय ताकौ भयौ, हरि गुन गाइकै।।

स्पष्ट है कि हिंदी में 'अनुवाद' के अर्थ में 'भाषा' शब्द का भी व्यवहार होता रहा है।

'तर्जुमा' और 'उल्था' शब्द प्रयोग : वस्तुतः यह कही जा सकता है कि मुगलकाल के दौरान 'अनुवाद' के संदर्भ में 'तर्जुमा' और 'उल्था' शब्दों के प्रयोग को भी देखा जाता है। इन शब्दों के प्रयोग के मूल में फारसी प्रभाव रहा है।

'तर्जुमा' शब्द 'रग्म' (razam) से बना है, जिसका अर्थ है 'interpret'। शाब्दिक अर्थ के धरातल पर 'तर्जुमा', अनुवाद से अधिक अर्थ–व्यंजक है और इसमें निर्वचन

(interpretation) भी शामिल है। यहाँ यह उल्लेख करना भी अनुचित न होगा कि सभी अनुवाद, व्याख्याओं (explanations) के पहलू हैं। इसीलिए 'अनुवाद' के साथ–साथ 'तर्जुमा' शब्द का भी खूब प्रयोग किया गया।

वैसे, फारसी भाषा के प्रभाव से हिंदी में कहीं–कहीं 'उल्था' शब्द का प्रयोग भी होता था। हिंदी साहित्य के इतिहास पर नजर दाड़ाएँ तो पता चलता है कि खड़ी बोली हिंदी गद्य को विकसित करने वाले प्रमुख गद्यकारों में से राजा लक्ष्मण सिंह (1826–1866) ने तथा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में नवजागरण को प्रथम सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885) ने 'तर्जुमा', 'उल्था' और 'अनुवाद', तीनों ही शब्दों का प्रयोग किया था। उदाहरण के लिए, राजा लक्ष्मण सिंह ने लिखा है कि *'हमने नियम रखा है कि मूल का कोई अक्षर उल्था होने से रह न जाए, न कोई अधिक अक्षर उल्था में बाहर से लाया जाए और विभक्त्यर्थ भी जहाँ तक हो सका उलट–पलट नहीं होने दिया है।'* इसी तरह, भारतेंदु हरिश्चंद्र 'रत्नावली' के अनुवाद की भूमिका में लिखते हैं – *'नाटकों का तर्जुमा प्रकाशित होता जाएगा।'*

'अनुवाद' शब्द प्रयोग : जहाँ तक हिंदी में सबसे पहले 'अनुवाद' शब्द के प्रयोग का संबंध है, भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ही अपने साहित्य में इसे सबसे पहले प्रयुक्त किया था। उन्होंने अपने साहित्य में इसका कई जगह इस्तेमाल किया। जैसे, नाटक के उपक्रम में उन्होंने लिखा – 'मुद्राराक्षस का जब मैंने अनुवाद किया।' या फिर, 'हिंदी की उन्नति' पर अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा – *'या सब विद्या की कहूँ होइ जु पै अनुवाद।'* और *'अलहा बिरहहु को भयो अंगरेजी अनुवाद।'*

लेकिन, यह भी सही है कि कालांतर में 'भाषा', 'तर्जुमा' और 'उल्था' शब्द बहुत अधिक चलन में नहीं आए। इस तरह हम सकते हैं कि 'भाषा', 'भाषानुवाद', 'टीका', 'तर्जुमा' और 'उल्था' आदि शब्दों की यात्रा करते हुए और 19वीं शताब्दी तक पहुँचते–पहुँचते 'अनुवाद' शब्द स्थायी रूप से स्वीकृत और मान्य हो चुका था।

1.4.3 हिंदीतर भाषाओं में 'अनुवाद' शब्द के पर्याय

जहाँ तक हिंदी–इतर भाषाओं का संबंध है, अपने वर्तमान अर्थ में 'अनुवाद' अथवा उसके मिलते–जुलते रूप का प्रयोग संस्कृत, बांग्ला, तेलुगु, कन्नड, गुजराती, मराठी, पंजाबी, ओडिशा एवं असमिया आदि भाषाओं में 18वीं सदी तक व्यवहार में लाया जाने लगा। असमिया, बांग्ला और ओडिया भाषाओं में 'अनुबाद' शब्द का प्रयोग होता है और तेलुगु में 'अनुवदर' या 'अनुवादम' शब्द का। वैसे, उर्दू के अलावा तेलुगु आदि कुछ भाषाओं में 'तर्जुमा' शब्द का प्रयोग मिलता है। इसी तरह, कश्मीरी भाषा में 'तरजमु', सिंधी और गुजराती में 'तर्जमो' और अनुवाद और 'भाषांतर' शब्द व्यवहृत होते हैं। लेकिन यहाँ यह भी गौर करने वाली बात यह है कि हिंदी की तुलना में बांग्ला में अपेक्षाकृत पहले वर्तमान अर्थ में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग किया जा रहा था क्योंकि बांग्ला में व्यवस्थित अनुवादों की परिपाटी, हिंदी से अधिक प्राचीन है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 'अनुवाद' शब्द तो प्राचीन है, किंतु पहले उसका वह अर्थ नहीं था, जिस अर्थ में आज इसका प्रयोग किया जाता है। आधुनिक अर्थ से दूर दिखाई पड़ने के बावजूद 'अनुवाद' शब्द 'Translation' से इतना दूर नहीं कहा जा सकता क्योंकि 'अनुवाद' में आज भी एक पूर्व–कथन का होना तो जरूरी ही है।

1.5 'अनुवाद' और 'रूपांतर'

अब तक की गई चर्चा से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि स्वयं 'अनुवाद' शब्द ने 'अनुवचन', 'अनुवाक', 'अनुकथन', 'भाषा' (भाषानुवाद), 'तर्जुमा' और 'उल्था' जैसे कई पर्याय प्रयोगों से होड़ करते हुए एक निश्चित लंबी यात्रा तय करने के बाद स्थिरता को प्राप्त किया है। लेकिन, इसके बावजूद, अधुनातन चर्चा–परिचर्चा के जरिए पर्याय प्रयोग के रूप में 'अनुवाद' और 'रूपांतर' की सटीकता के प्रश्न को उठाया जाता है; इसे 'अनुवाद बनाम रूपांतर' तक के इर्द–गिर्द समेट दिया जाता है। विशेष बात यह भी है कि इस प्रकार की चर्चा–परिचर्चा हिंदी में अनुवाद चिंतन करने वालों में उतनी नहीं मिलती है, जितनी कि भारत में अंग्रेजी में अनुवाद–चिंतकों के चिंतन में।

इस संदर्भ में साहित्य अकादमी से दो भागों में प्रकाशित 'हिंदी अनुवाद विमर्श' पुस्तक के संपादक प्रो. अवधेश कुमार सिंह का कहना है कि *'भारतीय इतिहास, भाषिक स्थिति और सांस्कृतिक अनुभव की दृष्टि से कहना पड़ेगा कि अनुवाद के विविध प्रकारों को ध्यान में रखते हुए 'रूपांतरण' शब्द ज्यादा उपयुक्त है।* 'अनुवाद में अंतरण 'ट्रांसफरेंस' तो होता ही है पर इसके रूप अलग–अलग होते हैं। यह भाषा के अलावा विषय–वस्तु, माध्यम, विधा, शैली आदि अनेक रूपों में भी हो सकता है। तभी अंतर–माध्यमिक अंतरण का अध्ययन संभव होगा। रामकथा के संस्कृत में मानकीकारण के बावजूद वह विभिन्न भारतीय भाषाओं में पश्चिमी ढंग के अनुवाद की तरह नहीं रूपांतरण के रूप में अस्तित्व में आई। यहाँ विचार, अर्थ या भाव केंद्रीय तत्व है – शाब्दिक वफादारी नहीं। इसमें विधा के अनुसार बदलाव की संभावना है। कथा परंपरा में, कथावाचन में विचार के पुनरुन्मुखीकरण की भी स्वतंत्रता है। अतः भाषा रूप के अलावा वह नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला और लोक रूपों (जैसे रामलीला) और मौखिक कथा–प्रवचन परंपरा नित नए बदलते रूप में मिलती है। रूपांतरण में सृजनशीलता का अवकाश अवधारणा के स्तर पर उसे अनुवाद से अधिक समावेशी, विस्तृत तथा गत्यात्मक बनाता है।' (पृ.43)

इसमें कोई संदेह नहीं कि 'वास्तविक अनुवाद' की संज्ञा प्राप्त 'ट्रांसलेशन' करने की प्रक्रिया के दौरान किसी एक भाषा में व्यक्त विचार अथवा भाव को दूसरी भाषा में फिर से व्यक्त किया जाता है। एक भाषा से दूसरी भाषा में विचारों की यह अभिव्यक्ति–यात्रा तीन आधारभूत तत्वों के जरिए तय हो पाती है – विचार अथवा कथ्य (संदेश); कथन की भाषा (अर्थात स्रोत भाषा); और कथ्य को अंतरित करने की भाषा (अर्थात लक्ष्य भाषा)। ट्रांसलेशन इन्हीं तीनों तत्वों से संपन्न हो पाता है। अनुवाद–कर्म में स्रोत भाषा और पाठ का प्रतिपाद्य विषय ही अनुवादक का केंद्रीय सरोकार होता है और उसे मूल पाठ के प्रति एकनिष्ठ (मूलनिष्ठ) रहते हुए अनूदित पाठ को मौलिक पाठ की भाँति सहज और स्वाभाविक स्वरूप वाला बोधगम्य पाठ बनाना होता है। इस स्थिति में मूल पाठ के प्रति निष्ठा को बनाए रखना और यथासंभव उसे बिना किसी तरह की विशेष हानि पहुँचाए, दूसरी भाषा में मूल के आशय को संप्रेषित करना ही अनुवादक का दायित्व होता है। स्वाभाविक है कि इस प्रक्रिया में विचार या कथ्य तो यथावत बना रहता है और भाषा का माध्यम बदल जाता है – वह स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अंतरित हो जाता है। देखा जाए तो इस प्रक्रिया के मूल में अंतरण तो भाषा का हुआ है। इसीलिए 'भाषांतर' या 'भाषांतरण' भी कह दिया जाता है। भाषा का अंतरण होने की प्रक्रिया में भाषा परिवर्तित रूप लिए हुए नजर आती है, इसलिए अनुवाद को 'रूपांतरण' भी कह दिया जाता है।

भाषा के अंतरण (अनुवाद) की प्रक्रिया में (स्रोत भाषा पाठ का) रूप बदल जाता है, इसलिए 'अनुवाद' शब्द प्रयुक्त करने के स्थान पर 'रूपांतर' या 'रूपांतरण' शब्द प्रयुक्त करने के पक्ष में विचार हमारे सामने आते हैं। जबकि, वास्तविकता यह है कि जीवविज्ञान (विशेष तौर पर वनस्पति विज्ञान), समाजशास्त्र, सृजनात्मक कर्म, माध्यम परिवर्तन आदि विविध विषयों या क्षेत्रों में व्यवहृत होने वाले 'रूपांतर' शब्द को जब हम अनुवाद के संदर्भ में देखते हैं तो यह मूल पाठ के सभी रूपों के अंतरण से संबंधित व्यापक आयाम को लिए हुए है। वैसे तो जब 'रूप' शब्द का प्रयोग किया जाता है तो वह दृश्यमानता की ओर संकेत करता है। भाषा के स्तर पर यह दृश्यमानता लिखित रूप का संकेत करती है, जबकि 'रूपांतर' के संदर्भ में यह विभिन्न स्तरों की संकेत है।

रूपांतर के विभिन्न स्तरों में मूल पाठ का अनूदित पाठ के रूप में अंतरण, मूल पाठ रूप की लक्ष्य भाषिक मंचीय प्रस्तुति और स्रोत पाठ का लक्ष्य भाषिक स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण जैसे स्टीरियोटाइप पक्ष शामिल हैं। वैसे, इन सभी संदर्भों में स्रोत पाठ की स्रोत भाषा के ही अन्य पाठ रूप (सोर्स टेक्स्ट टू ऐनदर सोर्स टेक्स्ट) में, स्रोत भाषिक मंचीय प्रस्तुति और स्क्रीन अथवा फिल्मांतरण जैसे रूपांतरण भी शामिल हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इन गतिविधियों में भाषा के स्तर पर रूप का अंतरण न होकर केवल विधा या माध्यम में परिवर्तन किया जाता है। यदि एक विधा या माध्यम की भाषा सामग्री का उसी भाषा की दूसरी विधा या माध्यम में इस प्रकार का समान–भाषिक रूपांतरण (सेम लैंग्वेज एडाप्टेशन) किया जाता है तो रूपांतर, सृजनात्मक लेखन (क्रिएटिव लिटरेचर) के अंतर्गत मीडिया लेखन विषय के अंतर्गत भी आ जाता है। और, जब यही गतिविधि (अर्थात रूपांतर) विधा या माध्यम परिवर्तन के साथ–साथ भाषा परिवर्तन से भी जुड़ जाती है (यानी वह दो भाषाओं के बीच घटित होने वाली गतिविधि हो जाती है) तो वह 'अनुवाद' विषय–क्षेत्र से संबद्ध हो जाती है।

रूपांतरण और रूपांतर प्रायः समानार्थक हैं। यह एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसका एक प्रकार 'भाषिक अनुवाद' भी है। रूपांतरण की प्रक्रिया में भाषा और विषयवस्तु के साथ–साथ स्रोत भाषा पाठ का लक्ष्य भाषा पाठ रूप में अंतरण, स्रोत पाठ रूप की लक्ष्य भाषिक मंचीय प्रस्तुति और स्रोत पाठ का लक्ष्य भाषिक स्क्रीन या फिल्म रूपांतरण जैसे स्टीरियोटाइप पक्षों का तो अंतरण किया ही जाता है, साथ ही इसमें स्रोत भाषा पाठ को स्थानीयकृत (देशीकृत) रूप देना या फिर उसका 'अभिग्रहण' (एप्रोपिएशन) करना जैसे स्तर भी शामिल होते हैं। इसके अलावा इसमें 'विधा' और 'प्रारूप' (फॉर्मेट) के अंतरण (दूसरी भाषा–समाज के साथ अनुकूलित रूप लिए हुए क्लोनिंग) के आयाम भी शामिल हैं। ये सभी आयाम 'रूपांतर' को विशिष्टता प्रदान करते हैं; उसे अनुवाद की विशिष्ट विधा बना देते हैं।

एक विशिष्ट विधा के रूप में रूपांतरण, अनुवाद की सीमित–सुनिश्चित परिभाषा से अलग अस्तित्व वाला सिद्ध होता है। रूपांतरण के इन विभिन्न और व्यापक स्तरों के कारण स्रोत भाषा पाठ की जब लक्ष्य भाषा में प्रस्तुति होती है तो वह अक्षरशः वास्तविक अनुवाद नहीं रह जाता; रूपांतरित पाठ 'छायानुवाद', 'अनुसृजन' और 'अंतरप्रतीकात्मक' अनुवाद आदि बनकर मूल भाषा और प्रतिपाद्य विषय को दूर तक ले जा सकता है। या फिर, परिवर्तन – स्थानीयकृत रूप में देशी रचना प्रतीत हो सकती है। और यदि मूल पाठ का लक्ष्य भाषा में अभिग्रहण किया गया हो तो अभिगृहीत रचना नया पाठ तक का रूप लिए हुए हो सकती है। जबकि, वास्तविक अनुवाद–कर्म के केंद्र में एक स्रोत पाठ तथा उसका प्रतिपाद्य होता है, जिसे दूसरी भाषा में अर्थ

और शैली के स्तर पर यथासंभव समतुल्य प्रस्तुत करना होता है। अगर अनूदित पाठ अर्थ के धरातल पर मूल से दूर हो जाए, वह मूल की छाया का आभास मात्र कराने वाला हो या फिर स्रोत भाषा (मौलिक) पाठ से इतर नया – अनुसृजित (recreated) – पाठ हो जाए तो वह लक्ष्य भाषा में रूपांतरित भले ही कहलाएगा, लेकिन वह वास्तविक अनुवाद नहीं होगा। तात्पर्य यह है कि अनुवाद की तुलना में रूपांतरण विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है। इस कारण 'रूपांतरण' को 'अनुवाद' के एक प्रकार के रूप में स्वीकार किया जाता है; विशिष्ट विधा माना जा सकता है। लेकिन इसे 'अनुवाद' शब्द के पर्याय के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती क्योंकि 'ट्रांसलेशन', मूल पर आधारित वास्तविक अनुवाद केंद्रित होता है न कि परिवर्तनों से युक्त एक नया स्वतंत्र पाठ।

समतुल्यता की कसौटी अनुवाद और रूपांतरण में स्पष्ट विभाजक रेखा खींचती है। लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं है कि रूपांतरण में समतुल्यता संभव ही नहीं। रूपांतरण में यह समतुल्यता केवल तभी संभव हो सकती है जब कथ्य या कथावस्तु में सार्वभौमिकता और सार्वकालिकता हो। उस स्थिति में कृति के मूल भाव को बनाए रखते हुए उसे विश्व के किसी भी पात्र अथवा देश–काल (परिवेश आदि) में परिवर्तित करते हुए ढाला जा सकता है, किंतु स्थानीयता से संपन्न मूल कृति का रूपांतरण असंभव अथवा बहुत अधिक कठिन कार्य है।

वस्तुतः 'अनुवाद' और 'रूपांतरण' का अपना–अपना पृथक अस्तित्व होते हुए भी दोनों परस्पर संबंधित शब्द हैं। अनुवाद अपने शाब्दिक अर्थ में भाषा का अंतरण (भाषांतरण) की प्रक्रिया है, जबकि रूपांतरण भाषा और अन्य माध्यम के बीच की प्रक्रिया हो सकता है। इसलिए भाषिक अनुवाद में रूपांतरण उसका एक प्रकार है। विशेष बात यह भी है कि ये दोनों अपने–अपने क्षेत्र में कला हैं। अनुवाद की अनेक विधाओं में 'रूपांतरण' भी एक विशिष्ट विधा है, जिसे रचना को स्थानीयकृत या विधांतरण जैसे किसी न किसी विशिष्ट उद्देश्य के निमित्त अनुवाद–कर्म के एक प्रकार/विधा विशेष के रूप में व्यवहार में लाया जाता है। साथ ही, विभिन्न स्तरों पर परिवर्तन करते हुए लक्ष्य भाषा में और उसके देश–काल तथा संस्कृति के अनुरूप परिवर्तित रचना मूल कथानक, धारणा और प्रभाव से युक्त बने रहना ही रूपांतरण है, अन्यथा रूपांतरित पाठ स्थानीयकृत रूप वाला 'छायानुवाद' अथवा 'अनुसृजन' तक के साँचे में व्याप्त हो जाएगा।

1.6 'अनुवाद' (Translation) की परिभाषा

इकाई में अब तक की गई चर्चा से यह स्पष्ट हो चुका होगा कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार है। दो भाषाओं के बीच संवाद स्थापित करने वाला यह कार्य–व्यापार एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरे भाषा–भाषियों तक पहुँचाने से संबंधित है। इससे जहाँ दो भाषाओं के बीच संवाद की स्थिति बनती है, वहीं मूल भाषा में कही गई बात का विस्तार भी होता है। इस तरह, अनुवाद भाषिक दूरियों को दूर करके समानता का धरातल निर्मित करता है। किंतु किसी एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना सरल कार्य नहीं होता। इसकी प्रक्रिया जितनी जटिल है, उसकी परिभाषा देना भी उतना ही कठिन कार्य है। इसका आधारभूत कारण यह है कि अनुवाद की सर्वमान्य परिभाषा सुनिश्चित नहीं हो पाई है। देश–विदेश के अनेक अनुवाद चिंतकों–विचारकों और अनुवादकों ने अनुवाद का अर्थ

स्पष्ट करने के लिए अपनी–अपनी दृष्टि से भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ दी हैं। ये परिभाषाएँ अनुवाद के कतिपय पक्षों पर प्रकाश डालती हैं। इन परिभाषाओं में हमें अलग–अलग भाषा, शब्दों और मुहावरों का प्रयोग देखने को मिलता है। इनसे हमें अनुवाद के अर्थ और स्वरूप को बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलती है। आइए कुछ प्रमुख अनुवाद–चिंतकों द्वारा दी गई परिभाषाओं में व्यक्त किए विचारों को समझने–जानने की कोशिश करें।

1.6.1 प्रमुख अनुवाद–चिंतकों द्वारा दी गई परिभाषाएँ

प्रसिद्ध अनुवाद–सिद्धांतशास्त्री यूजीन ए.नायडा और चार्ल्स टेबर ने *'दि थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ ट्रांसलेशन'* नामक पुस्तक में 'ट्रांसलेशन' (अनुवाद) में अर्थ के साथ–साथ शैली को भी महत्व दिया है। उनके अनुसार 'अनुवाद का तात्पर्य है – स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश को प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है, फिर शैली के स्तर पर।' (*Translating consists in reproducing in the receptor language the closest natural equivalent of the source language message, first in terms of meaning and secondly in terms of style.*) स्पष्ट है कि नायडा उसी को सफल अनुवादक मानते हैं जो अर्थ और शैली के स्तर पर लक्ष्य भाषा में समतुल्यता स्थापित करने में सफल हो पाता है।

जे.सी. कैटफर्ड ने अनुवाद को पाठ्य–सामग्री का प्रतिस्थापन माना है। 1965 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *'A Linguistic Theory of Translation'* में उन्होंने यह कहा है कि 'एक भाषा की पाठ्य–सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य–सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद है।' (*The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language.*) ध्यान देने की बात यह है कि पाठ्य–सामग्री के प्रतिस्थापन के अंतर्गत भाषा विशेष के स्वन, स्वनिम, भाषा की वर्ण संबंधी इकाइयाँ (लिपि, वर्णमाला आदि), शब्द तथा संरचना जैसे विभिन्न स्तरों का प्रतिस्थापन शामिल है।

यदि हम नायडा और कैटफर्ड के विचारों की तुलना करें तो यह पाते हैं कि नायडा, अनुवाद में मूल पाठ के शिल्प की तुलना में अर्थ पक्ष के अनुवाद को अधिक महत्व देते हैं वहीं कैटफर्ड अर्थ की तुलना में शिल्प संबंधी तत्वों को अधिक महत्व देते हैं।

पीटर न्यूमार्क के अनुसार, *'अनुवाद एक ऐसा शिल्प है जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।'*

अनुवाद में अर्थ के महत्व पर विशेष बल देते हुए डॉ. सैम्युअल जॉनसन ने कहा है कि 'अनुवाद का आशय अर्थ को बनाए रखते हुए उसे अन्य भाषा में अंतरित करना है।' (*To translate is to change into another language, retaining the sense.*)

ए.एच. स्मिथ ने अनुवाद में 'यथासंभवता' पर जोर देते हुए कहा है कि 'अनुवाद का तात्पर्य है – यथासंभव अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना है।' (*To translate is to change into another language, retaining as much as of the sense as one can.*)

विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अनुवाद के संबंध में दी गई परिभाषाओं को जानने के बाद आइए कुछ **भारतीय अनुवाद–चिंतकों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को भी जानें।**

प्रो. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव का कहना है कि *'एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सृजनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद कहा जाता है।'*

डॉ. नगेंद्र के अनुसार, *'निकटतम पर्याय शब्दावली और वाक्य विन्यास के द्वारा स्रोत भाषा के मूल पाठ को समग्र रूप से अर्थात उसके संपूर्ण प्रतिपाद्य विषय तथा रूपबंध आदि की यथासंभव रक्षा करते हुए लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है।'*

अनुवाद के संबंध में डॉ. भोलानाथ तिवारी का कहना है कि *'आदर्श अनुवाद वह है जो शब्दानुवाद तथा भावानुवाद दोनों पद्धतियों को यथावसर अपनाते हुए मूल मात्र के साथ–साथ यथाशक्ति मूल शैली को भी अपने में उतार लेता है और साथ ही लक्ष्य भाषा की सहज प्रकृति को भी अक्षुण्ण बनाए रखता है।'*

प्रो.कृष्ण कुमार गोस्वामी ने अनुवाद को समतुल्यता के आधार पर लक्ष्य भाषा में पुनर्सृजित करना माना है और लिखा है कि *'स्रोत भाषा में व्यक्त पाठ्य–सामग्री का निकटतम समतुल्यता के आधार पर लक्ष्य भाषा की पाठ्य–सामग्री में पुनर्सृजन करना अनुवाद है।'*

प्रमुख अनुवाद–चिंतकों द्वारा अनुवाद के संबंध में दी गई परिभाषाओं का अवलोकन करने के बाद, आइए **कुछ प्रमुख साहित्यकार–अनुवादकों द्वारा दी गई परिभाषाओं** पर भी विचार करें।

1.6.2 प्रमुख साहित्यकार–अनुवादकों द्वारा दी गई परिभाषाएँ

एडवर्ड फिट्जेराल्ड का कहना है कि 'अनुवादक को अपनी रुचि के अनुसार मूल रचना को ढाल देना चाहिए क्योंकि मरे हुए शेर से जीवित कुत्ता कहीं अच्छा होता है।' (*I am persuaded that....translator...must recast the original into his on likeness...the live dog is better than the dead lion.*)

जे.डब्ल्यू. गेटे का कहना है कि '.....अनुवाद की अपूर्णता के संबंध में कोई चाहे जो भी कहे, परंतु अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और महानतम कार्य है।' (*'..say what one will of the inadequacy of translation, it remains one of the most important and worthiest concerns in the totality of world affairs.'*)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का विचार है कि *'अनुवाद भाव प्रति भाव होना चाहिए, स्रोत भाषा की छाया से लक्ष्य भाषा को यथासंभव बचाना चाहिए। अनुवाद से संबद्ध शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। आवश्यकतानुसार मूलनिष्ठ या मूलयुक्त अनुवाद करना चाहिए।'*

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि *'शब्दों का प्रयोग तो केवल भाव प्रकट करने के लिए होता है, अतएव भाव प्रदर्शक अनुवाद ही उत्तम अनुवाद है।'*

डॉ. हरिवंशराय बच्चन का कहना है कि *'अनुवाद की चरम सफलता यही मानी गई है कि वह अनुवाद न मालूम होकर मौलिक रचना प्रतीत हो। जिस अनुपात में यह अनुवाद मौलिक प्रतीत होगा, उसी अनुपात में उसे सफल माना जा सकता है।'*

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का अनुवाद के संबंध में यह कहना है कि *'समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त को भाषा में प्रस्तुत करती है।'*

अनुवाद संबंधी अपने अनुभवों को व्यक्त करते हुए डॉ. धर्मवीर भारती ने कहा है कि *'मूल कृति और अनुवाद के बीच में बहुत–सी दीवारें हैं – पृथक संस्कार, पृथक काव्य रूढ़ियाँ, पृथक बिंब–समूह। जोड़ने वाला तत्व बहुत क्षीण रहता है और ऐसी स्थिति में सफल अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह शाब्दिक अनुवाद नहीं हो पाता और शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह सफल नहीं हो पाता। अनुवादों के संबंध में मेरे ख्याल में एक बीच का रास्ता निकालने की गुंजाइश है।'*

महादेवी वर्मा के अनुसार, *'भाषा विचारों और मनोभावों का परिधान है और इस दृष्टि से एक विचारक या कवि की उपलब्धियाँ जिस भाषा में व्यक्त हुई हैं, उन्हें दूसरी वेशभूषा में लाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य रहता है।'*

अनुवाद के संबंध में अमृता प्रीतम का कहना है कि *'अनुवाद तभी बेहतर होता है जब किसी भाषा के शब्द हमारे दिल में दस्तक देते हैं, हमारे खून में मिलकर बहने लगते हैं, हमारे दिल में धड़कने लगते हैं।'*

अनुवाद संबंधी परिभाषाओं का निष्कर्ष

'अनुवाद' को परिभाषित करने वाली उपर्युक्त विभिन्न परिभाषाएँ अनुवाद के अर्थ और स्वरूप को दर्शाने वाले विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करती हैं। ऐसे में सर्वमान्य परिभाषा सुनिश्चित करना मुश्किल है। वैसे इतना तो अवश्य ही है कि कुछ विद्वानों ने अनुवाद के सामान्य स्वरूप को ध्यान में रखकर विचार व्यक्त किए हैं और कुछ ने विशेष स्वरूप के संदर्भ में। लेकिन आज के संदर्भ में इतना तो स्पष्ट है कि एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद है। इसलिए, उपर्युक्त परिभाषाओं के विवेचन–विश्लेषण के आधार पर अनुवाद के संबंध में निम्नलिखित तथ्य उभरकर सामने आते हैं :

- द्विभाषिकता अनुवाद की न्यूनतम शर्त है।
- अनुवाद वह भाषिक प्रक्रिया है, जो दो भिन्न भाषाओं के बीच घटित होती है।
- अनुवाद के माध्यम से एक भाषा में व्यक्त विचारों या कथ्य या संदेश (अर्थ) को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त किया जाता है।
- यह अभिव्यक्ति केवल संरचना के अर्थ के स्तर तक ही सीमित नहीं होती, संदर्भ के अर्थ और सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित अर्थों तक व्याप्त होती है।
- सार्थक पुनरुक्ति, अनुवाद का मूल तत्व है।
- अनुवाद में पूर्णतः समान अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।
- समान संदेश की अभिव्यक्ति के कारण स्रोत और लक्ष्य भाषा पाठ समानार्थी होते हैं।
- अनुवाद में मूल के अर्थ के साथ–साथ शैली को भी सुरक्षित रखा जाता है।

1.7 'अनुवाद' का संदर्भ

अब तक किए गए अध्ययन के आधार पर आपको यह बोध हो गया होगा कि 'अनुवाद' शब्द को दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार के संदर्भ में इस्तेमाल में लाया जाता है। लेकिन, यहाँ यह विचार करना भी उपयुक्त होगा क्या अनुवाद का यही अर्थ है? क्या 'अनुवाद' का प्रारंभिक अर्थ भी वही था, जिस अर्थ में इसे आज व्यवहार में लाया जा रहा है। वास्तविकता यह है कि अनुवाद का केवल यही अर्थ–संदर्भ नहीं है। अर्थ–व्याप्ति के स्तर पर देखें तो 'अनुवाद' स्वयं में कई आयामों को समेटे हुए है। इसलिए यह व्यापक संदर्भ वाला शब्द है। इसके अलावा, अगर 'अनुवाद' को केवल दो भाषाओं के बीच की गतिविधि के तौर पर आँकते हैं तो वह 'अनुवाद का सीमित संदर्भ' हो जाता है। आइए इन दोनों संदर्भों पर विस्तार से विचार करें और उसके आधार पर अनुवाद के स्वरूप को समझने की कोशिश करें।

1.7.1 'अनुवाद' का व्यापक संदर्भ

पारंपरिक अर्थ में एक ही भाषा में कही गई बात को उसी भाषा में स्पष्ट करने के लिए कहना या फिर परवर्ती अर्थ में एक भाषा में व्यक्त भावों–विचारों आदि को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद है। लेकिन, अनुवाद को केवल दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार तक सीमित रखकर नहीं देखा जाता। यह कार्य–व्यापार एक ही भाषा में व्यक्त संदेश को उसी भाषा–विशेष में केवल सरल–सहज शब्दों में प्रस्तुत कर देने या फिर किसी एक ही भाषा की एक बोली अथवा शैली से दूसरी बोली या शैली में प्रस्तुत कर देने को भी 'अनुवाद' के रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

इसके अलावा, दो भिन्न प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाले अर्थ के अंतरण को भी अनुवाद का ही रूप स्वीकार किया जाता है। यह भाषिक प्रतीक व्यवस्था और भाषिकेतर प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाला अनुवाद होता है, जिसमें एक प्रतीक व्यवस्था में कही गई बात को अर्थ–परिवर्तित किए बिना ही दूसरी प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त कर दिया जाता है। इस आधार पर यह 'कथ्य का प्रतीकांतरण' होता है, जिसका संबंध दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच होने वाले अंतरण व्यापार है। इसे 'कथ्य का संकेतांतरण' भी कह दिया जाता है। इसके अंतर्गत कथ्य को प्रतीकांतरण या संकेतांतरण की प्रक्रिया से लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। लियोनार्दो द विंची (1452–1519) की अमर कलाकृति *'मोनालिसा'* और उसकी रहस्यमय मुस्कुराहट को ध्यान में रखकर विश्व के अनेक साहित्यकारों द्वारा रचित कृतियाँ इसी प्रकार के प्रतीकांतरण के (अर्थात दो भिन्न माध्यमों के बीच) अनुवाद का उदाहरण हैं। इसी संदर्भ में भारत के प्रसिद्ध कलाकार राजा रविवर्मा की कलाकृति का भी उल्लेख करना अनुचित न होगा, जिसके आधार पर नाथूराम शर्मा 'शंकर' ने *'केरल की तारा'* के नाम से एक लंबी कविता लिखी थी। इन उदाहरणों के माध्यम से कहने का तात्पर्य यह है कि दो भिन्न माध्यमों के बीच अनुवाद (प्रतीकांतरण) के बीच भी अनुवाद होता है।

उक्त विवेचन के आधार पर देखा जाए तो अनुवाद के तीन संदर्भ स्पष्ट होते हैं – (क) एक ही भाषा में अनुवाद; (ख) एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद; और (ग) दो भिन्न माध्यमों अथवा प्रतीक व्यवस्थाओं (एक भाषिक तथा दूसरा भाषेतर संप्रेषण प्रतीक) में अनुवाद। अनुवाद के ये तीनों पक्ष इसे व्यापक अर्थ–संदर्भ प्रदान करते हैं। प्रसिद्ध भाषाविद रोमन जैकब्सन (Roman Jakobson) ने *'ऑन ट्रांसलेशन'* शीर्षक पुस्तक में अपने आलेख *'ऑन लिंग्विस्टक आस्पैक्ट्स ऑफ ट्रांसलेशन'* (संपा.आर.ए.

ब्रॉवर) में अनुवाद के इन तीनों विस्तृत संदर्भों का निम्नलिखित प्रकार से नामकरण किया है :

क) अंतःभाषिक अनुवाद (Intra-lingual Translation)

ख) अंतर–भाषिक अनुवाद (Inter-lingual Translation)

ग) अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter-Semiotic Translation)

समय के साथ–साथ जिस तरह से साहित्य लेखन की विधाएँ विस्तार पाती जा रही हैं, वैसे ही अंतःभाषिक, अंतर–भाषिक; और अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद जैसे अनुवाद के अवधारणागत आयामों के संदर्भ भी विस्तार पा रहे हैं। जैसे, एक भाषा के छंद में कही गई बात को उसी भाषा में गद्य रूप में प्रस्तुत करना भी एक प्रकार का 'अंतःभाषिक विधात्मक अनुवाद' (Intra-lingual Genre Translation) है। विधात्मक अंतरण की यह स्थिति यदि दो अलग–अलग भाषाओं के बीच बनती है तो उसे 'अंतर–भाषिक विधात्मक अनुवाद' (Inter-lingual Genre Translation) कहेंगे।

इसी प्रकार रोमन जेकब्सन की कथ्य के प्रतीकांतरण की प्रक्रिया से लक्ष्य भाषा व्यवस्था या माध्यम में प्रस्तुत करने संबंधी 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' की अवधारणा भी व्यापक हो रही है क्योंकि इसमें भाषिकेतर प्रतीक व्यवस्था से भाषिक संकेत व्यवस्था में कथ्य का अंतरण न होकर विपरीत स्थिति भी बनती है। उदाहरण के लिए, *रामायण–महाभारत* महाकाव्यों, आर.के. नारायण के उपन्यास *'गाइड'*, श्रीलाल शुक्ल के *'राग दरबारी'*, प्रेमचंद के *'गोदान'* या फिर फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी *'मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम'* आदि उपन्यासों–कहानियों का फिल्म या सीरियल के रूप में रूपांतरण वास्तव में भाषिक प्रतीक व्यवस्था की दृश्यात्मक प्रस्तुति है यानी यह 'पाठ से दृश्य प्रस्तुति' है। इसी प्रकार, विज्ञापन, वृत्तचित्र, गीत आदि का निर्माण अर्थात 'पाठ की दृश्य प्रस्तुति' भी इसी के अंतर्गत आते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि इस प्रकार का रूपांतरण पाठ का दृश्य–श्रव्य रूप में प्रस्तुतीकरण है, जो वस्तुतः अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का ही विस्तार है।

आइए, अनुवाद के इन सभी संदर्भों पर विचार करें।

क) अंतःभाषिक अनुवाद (Intra-lingual Translation) : अंतःभाषिक अनुवाद, एक ही भाषा के अंतर्गत घटित होने वाला कार्य–व्यापार है। इस प्रकार के अनुवाद को 'अन्वयांतर' भी कहा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक एक भाषा में व्यक्त विचार अथवा कही गई बात को उसी भाषा में कुछ दूसरी तरह से कह देना या व्यक्त कर देता है। यह एक प्रकार से व्याख्या अनुवाद है।

अंतःभाषिक अनुवाद कई प्रकार से संपन्न होता है। जैसे, प्राचीन भाषा में लिखित पाठ की आधुनिक भाषा में प्रस्तुति, एक ही भाषा की शैली की सामग्री की उसी भाषा की दूसरी शैली में प्रस्तुति, किसी एक विधा में रचित सृजनात्मक साहित्य की उसी भाषा की दूसरी विधा में प्रस्तुति और एक ही भाषा की किसी बोली में रचित पाठ का उसी भाषा की दूसरी बोली में अंतरण आदि। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भाषा–विशेष की गद्यात्मक रचना को उसी भाषा में पद्य (कविता) रूप में अनूदित कर देना या फिर पद्यात्मक रचना का गद्यानुवाद भी अन्वयांतर (अंतःभाषिक अनुवाद) ही है। इसके अलावा, भाषा की एक शैली को उसी भाषा की दूसरी शैली में प्रस्तुत करना भी अंतःभाषिक अनुवाद है। उदाहरण के लिए,

हिंदी भाषा की औपचारिक शैली में लिखी सामग्री को बोलचाल की भाषा–शैली में प्रस्तुत कर देना। इसी तरह, हिंदी की ब्रजभाषा बोली के पाठ को अवधी/भोजपुरी/खड़ी बोली आदि हिंदी की किसी भी अन्य बोली में प्रस्तुत करने को अंतःभाषिक अनुवाद में शामिल किया जाएगा।

अंतःभाषिक अनुवाद में अनुवादक का स्रोत भाषा की बोलियों और उनके व्याकरणिक संदर्भों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। इसके अलावा, अनुवादक को भाषा की विविध शैलियों एवं साहित्यिक विधाओं का ज्ञान होना भी जरूरी है ताकि वह अंतःभाषिक अनुवाद करते समय अनूदित पाठ में बेहतर प्रस्तुति कर सके।

साहित्य–जगत में अंतःभाषिक अनुवाद के पर्याप्त उदाहरण उपलब्ध हैं। जैसे, शेक्सपियर के अंग्रेजी के अनेक गीति नाट्यों का अंग्रेजी साहित्यकार चार्ल्स लैंब द्वारा गद्य रूप में किया गया अंतःभाषिक अनुवाद। इसी प्रकार, अमेरिकी विद्वान जॉन क्रोथर द्वारा *'स्पार्क नोट्स'* शृंखला के अंतर्गत शेक्सपियर के अनेक गीति नाट्यों और सॉनेट संकलन का गद्य में किया गया अनुवाद।

ख) **अंतर–भाषिक अनुवाद (Inter-lingual Translation)** : आम तौर पर हम अनुवाद शब्द को किसी एक भाषा की सामग्री के कथ्य को दूसरी भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया से जोड़कर देखते हैं। यानी जिसे हम 'अनुवाद' कहते हैं, वह वास्तव में 'अंतर–भाषिक अनुवाद' होता है। इसे 'भाषांतरण' भी कहा जाता है। यह एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में अंतरित करने से संबंधित है। उदाहरण के लिए, हिंदी–अंग्रेजी, जर्मनी–फ्रांसीसी, स्पैनिश–फ्रांसीसी, अंग्रेजी–चीनी, जापानी–पुर्तगाली, हिंदी–मलयालम, तमिल–हिंदी, उड़िया–कन्नड़, मराठी–असमिया आदि भाषाओं में परस्पर अनुवाद। अनुवाद का यही वास्तविक क्षेत्र है। इस तरह से किए जाने वाले अनुवाद को ही 'वास्तविक अनुवाद' (Translation Proper) माना जाता है।

अंतर–भाषिक अनुवाद करने के लिए अनुवादक का द्विभाषिक होना अनिवार्य आवश्यकता होती है। अर्थात उसका दोनों भाषाओं (स्रोत और लक्ष्य भाषा) पर अच्छा अधिकार और विषय–विशेष का ज्ञान होना जरूरी है। इसके साथ–साथ यह भी जरूरी है कि वह उन दोनों भाषाओं के संरचनागत वैशिष्ट्य और भाषिक मुहावरे से भली प्रकार से परिचित हो। दोनों भाषाओं के संरचनागत वैशिष्ट्य के बोध के अभाव में वह 'He is going to market.' का अनुवाद 'वह है जा रहा बाजार।' कर देगा। अगर उसे भाषिक मुहावरे की समझ नहीं होगी तो वह 'I am afraid I ought to be going.' का अनुवाद 'मुझे डर है कि अब मुझे जाना चाहिए।' कर सकता है। जबकि, जिस अनुवादक का दोनों भाषाओं पर अच्छा अधिकार होगा तो वह इस वाक्य का अनुवाद 'मुझे अब चलना चाहिए।' करेगा। इसी तरह, अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं–मान्यताओं, रीतिरिवाजों, ऐतिहासिक तथ्यों, धार्मिक विश्वासों आदि का भली प्रकार से बोध होना भी जरूरी है। इस बोध के अभाव में वह अपने पिता या गुरु या अध्यापक को संबोधित वाक्य 'What are you doing?' का अनुवाद 'तुम क्या कर रहे हो/तू क्या कर रहा है।' कर सकता है।

अंतर–भाषिक अनुवाद करते समय अनुवादक को स्रोत से लक्ष्य भाषा में समतुल्य रूप में अंतरित करना होता है। यह समतुल्यता इस बात पर निर्भर करती है कि मूल कथ्य अनूदित सामग्री में प्रतिस्थापित हो जाए। हालाँकि समतुल्य

अभिव्यक्तियाँ खोज कर अंतरित करना सरल कार्य नहीं है क्योंकि अनुवादक के समक्ष कई प्रकार की समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं, सीमाएँ रास्ता रोकती हैं। इनके साथ–साथ अनुवादक को अननुवाद्यता की स्थिति का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की समस्याओं–सीमाओं से जूझते हुए ही अनुवाद–अंतरण प्रक्रिया में व्यंजित अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए वह, कुछ जोड़ने या छोड़ने तक के प्रयास करता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक भावानुवाद, छायानुवाद, व्याख्या अथवा पुनर्सृजन आदि विभिन्न प्रकार की युक्तियों को अपनाता है।

ग) **अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद (Inter-Semiotic Translation)** : भाषा एक प्रतीकात्मक व्यवस्था है। प्रत्येक भाषा में कथ्य को भिन्न–भिन्न प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। संप्रेषण अथवा विचारों का आदान–प्रदान इसका उद्‌देश्य होता है। उदाहरण के लिए, चौराहे पर रुकने के अर्थ में लाल बत्ती वस्तुतः एक प्रतीक है।

'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद', वास्तव में दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच अनुवाद है। इसमें मूलतः प्रतीक का रूपांतरण होता है, इसलिए इसे 'प्रतीकांतरण' भी कहा जाता है। यह किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ की अन्य किसी भाषेतर प्रतीक व्यवस्था के रूप में अभिव्यक्ति है।

अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद, 'अंतःभाषिक अनुवाद' और 'अंतर–भाषिक अनुवाद' से इस अर्थ में भिन्न है कि यह (अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद) दो भिन्न माध्यमों (एक भाषिक तथा दूसरा भाषेतर) के बीच घटित होने वाला व्यापार है, जबकि अंतःभाषिक अनुवाद और अंतर–भाषिक अनुवाद का संबंध भाषा व्यवस्था से होता है यानी यह दो भाषिक व्यवस्थाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार है।

अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद में ध्यान रखने की बात यह है कि दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच इस प्रकार के अनुवाद में से एक भाषिक प्रतीक होता है और दूसरा भाषेतर। चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि भाषेतर प्रतीक हैं। ये प्रतीक भावाभिव्यक्ति के माध्यम होते हैं। इनमें भाषिक ध्वनियों का प्रयोग न होने के कारण ही इन्हें भाषेतर प्रतीक कहा जाता है। किसी कविता को सुरों में ढालना अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का प्रमाण है। *अभिज्ञान शाकुंतलम्* नाटक के दृश्यों को राजा रवि वर्मा द्वारा चित्रों में अंकित करना अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद ही कहा जा सकता है। इसी प्रकार, वात्स्यायन के *'कामसूत्र'* का खजुराहो की शिल्पकला में अवतरण भी अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का ही उदाहरण है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा की कृतियों में कविता के साथ–साथ चित्रात्मक प्रस्तुति में भी कविता के व्यक्त भावों की जो सशक्त अभिव्यक्ति नजर आती है, वह अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का रूप ही स्वीकार किया जाएगा। छायावाद के ही अन्य कवि जयशंकर प्रसाद विरचित *'कामायनी'* के कथ्य की डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा चित्रात्मक अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुति को भी अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद का प्रमाण कहा जा सकता है।

इसी तरह, किसी कहानी–उपन्यास आदि की कथा–वस्तु का फिल्म के रूप में दृश्यांकन अथवा नृत्य–नाटिका की प्रस्तुति भी ऐसा ही अनुवाद है। संस्कृत के महाकाव्य *रामायण* और *महाभारत* तथा आधुनिककाल में रचित *'देवदास'*, *'सारा आकाश'*, *'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम'*, *'गबन'*, *'मैला आँचल'*, *'गोदान'*, *'पाथेर पांचाली'*, *'मृगनयनी'*, *'राग दरबारी'*, *'चंद्रकांता' 'तमस'*, *'पिंजर'*, *'एक चादर मैली सी'*, *'साहिब बीवी और गुलाम'* आदि उपन्यासों या कहानियों आदि पर फिल्में या टी.वी. सीरियल वास्तव में प्रतीकांतरण ही हैं।

1.7.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ

प्रस्तुत इकाई के पिछले भाग 1.5.1 में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि कथ्य के प्रतीकांतरण या संकेतांतरण की प्रक्रिया अनुवाद को व्यापक अर्थ–संदर्भ प्रदान कर देती है। लेकिन, सीमित संदर्भ में अनुवाद को केवल दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार माना जाता है, जिसे रोमन जेकोब्सन ने 'अंतर–भाषिक अनुवाद' (Inter-lingual Translation) कहा था। यह 'अंतर–भाषिक अनुवाद' ही अनुवाद का सीमित संदर्भ है। इस प्रकार के अनुवाद को एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। चूँकि इसमें अर्थ का एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरण होता है, इसलिए इसे 'भाषांतरण' भी कह दिया जाता है। दो भाषाओं के बीच किए जाने वाले अर्थ के इस अंतरण को ही 'वास्तविक अनुवाद' (Translation Proper) माना जाता है।

स्पष्ट है कि अपने सीमित संदर्भ में अनुवाद एक भाषा की सामग्री के संदेश को दूसरी भाषा में संप्रेषित करने की प्रक्रिया है। इसमें यह ध्यान रखा जाता है कि लक्ष्य भाषा–भाषी पाठकों पर अनूदित पाठ का वही प्रभाव पड़ना चाहिए जो प्रभाव स्रोत भाषा–भाषी पाठकों पर पड़ा हो। अनुवाद की इस प्रक्रिया में 'सामग्री' एक पक्ष है और उसका 'संदेश' दूसरा पक्ष। अनुवाद प्रक्रिया का निर्धारण इन्हीं दोनों पक्षों पर निर्भर होता है क्योंकि मूल पाठ की प्रकृति को केंद्र में रखकर भी अनुवाद किया जा सकता है और संदेश को केंद्र में रखकर भी। संदेश वास्तव में मूल रचना के प्रभाव से संबंधित है। इस आधार पर अनुवाद को दो आयामों से देखा जा सकता है – (क) पाठधर्मी अनुवाद; और (ख) प्रभावधर्मी अनुवाद।

क) **पाठधर्मी अनुवाद** : स्रोत भाषा सामग्री के संप्रेष्य की लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापना 'पाठधर्मी अनुवाद' कहलाता है। इसमें मूल पाठ के संप्रेष्य का आधार लिया जाता है और पाठ की संरचना एवं बुनावट को ध्यान में रखा जाता है। यानी इसमें यह अपेक्षा की जाती है कि अनूदित पाठ की संरचना एवं बुनावट मूल पाठ के अनुरूप ही हो। यह पाठ–केंद्रित अनुवाद होता है यानी अनुवादक पाठ को 'स्वायत्त' मानते हुए और उसमें रमे रहकर उसकी भाषा का अध्ययन–विश्लेषण करके कथ्य अथवा निहित अर्थ को संप्रेष्य बनाता है। इसमें पाठ की भाषा संरचना आदि के विश्लेषण से मूल 'अर्थ' को ग्रहण करके उसे अनूदित पाठ में व्यक्त करने का भाव निहित है। इस आधार पर किए जाने वाले अनुवाद में अनुवादक को मूल पाठ से बाहर जाने की छूट नहीं होती है। अनूदित पाठ में अर्थ को प्रतिस्थापित करने के लिए वह पाठ की प्रकृति और प्रयोजन को ध्यान में रखता है। पाठधर्मी अनुवाद वास्तव में दो भाषाओं के संक्रमण का परिणाम होता है। ज्ञानात्मक तथा सूचना–प्रधान साहित्य का अनुवाद पाठधर्मी अनुवाद होता है। इसके अलावा, सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ और मुहावरे–लोकोक्तियों के भी मूलतः पाठधर्मी अनुवाद होते हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित मुहावरे–लोकोक्तियों और उनके हिंदी अनुवाद को देखिए :

अंग्रेजी	**हिंदी**
Cold war	शीत युद्ध
Red Tapism	लालफीताशाही
Black money	काला धन

White lie	सफेद झूठ
Cut-throat behaviour	गला–काट व्यवहार
Crocodiles tears	मगरमच्छ के आँसू
Grapes are sour	अंगूर खट्टे हैं
Diamond cuts diamond	हीरे को हीरा काटता है
Evil beginnings have bad endings	आदि बुरा तो अंत बुरा
As long as there is life, there is hope	जब तक साँस तब तक आस
To through dust in eyes	आँखों में धूल झोंकना

किंतु सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद करते समय पाठधर्मी अनुवाद से काम नहीं चल पाता। उदाहरण के लिए, अनूदित काव्य में मूल की संरचना, छंद, लय आदि की मूल के अनुरूप बुनावट असंभव है। लेकिन, कहीं–कहीं इसके अपवाद भी मिल जाते हैं। जैसे, यहाँ कवि अज्ञेय की कविता 'एक बूंद सहसा उछली' और उनके द्वारा ही किया गया अंग्रेजी अनुवाद विशेष रूप से द्रष्टव्य है :

मैंने देखा, एक बूंद	**I saw a drop**
मैंने देखा	I saw
एक बूंद सहसा	A drop suddenly
उछली सागर के झाग से	Fly from the suid of the sea
रंगी गई क्षण–भर	Flare for a second
ढलते सूरज की आग से	From the mellowing sun align
मुझको दीख गया	So there, I thought,
सूने विराट् के सम्मुख	Against the wall of emptiness
हर आलोक–छुआ अपनापन	This light shot one
है उन्मोचन	Has found release
नश्वरता के दाग से	From being blurred to nothing

हमें यहाँ यह भी ध्यान में रखकर चलना होगा कि एक भाषा में व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा में यथावत रूप में अंतरण नहीं हो सकता क्योंकि इस प्रक्रिया के दौरान दोनों भाषाओं की अपनी–अपनी विशेषताएँ और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश आदि बाधा उत्पन्न करते हैं। इसलिए स्रोत भाषा सामग्री को लक्ष्य भाषा में समतुल्यता के आधार पर इस प्रकार अंतरित किया जाता है कि मूल पाठ का संप्रेषणीय कथ्य लक्ष्य भाषा पाठ में प्रतिस्थापित हो जाए। जैसे, दवाई का 'संजीवनी बूटी के रूप में काम करना' का अंग्रेजी में 'to work as a Sanjivani Plant' के रूप में अंतरण करने के स्थान पर इसका प्रतिस्थापन 'medicine is a panecea' करना। लेकिन, कई बार समतुल्य सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के रूप में प्रतिस्थापना में कठिनाई आती है। इसलिए वहाँ व्याख्या का सहारा लेना या पुनर्सृजन करना पड़ जाता है। जैसे, 'जनेऊ' के लिए 'sacred thread' या 'holy string', 'लक्ष्मण रेखा पार करना' का अनुवाद 'exceeding one's limit is to invite trouble' स्वीकार करना। इसलिए अनुवादक स्रोत भाषा

संरचना और बुनावट के साथ–साथ उस भाषायी समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की ओर विशेष ध्यान देते हुए अनुवाद करता है जो स्वयं में एक श्रमसाध्य कार्य है।

ख) **प्रभावधर्मी अनुवाद :** प्रभावधर्मी अनुवाद वास्तव में पाठक पर प्रभाव को केंद्र में रखकर किया जाने वाला अनुवाद होता है। इसमें अनुवादक इस दृष्टि से अनुवाद करता है कि अनूदित पाठ के पाठक पर भी वही प्रभाव पड़ना चाहिए जो मूल पाठ के पाठक पर पड़ा होता है। इसके लिए वह मूल भाषा पाठ की संरचना और बुनावट की अपेक्षा मूल के उस प्रभाव को पकड़ने और उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है जो स्रोत भाषा के पाठकों पर पड़ा हो। अनुवादक, स्रोत भाषा पाठ के प्रभाव को पकड़कर अनूदित रचना में वही प्रभाव उत्पन्न करने का श्रम–साध्य प्रयास है। यह प्रभाव अनुवादक के लिए अनूदित पाठ के मूल्यांकन की कसौटी होता है। इसमें अनुवादक स्रोत भाषा की संरचना, वाक्य विन्यास और अर्थ विश्लेषण के साथ–साथ उसके व्यावहारिक और प्रयोगधर्मी अर्थ (Pragmatics) को भी अनूदित पाठ में व्यक्त करता है। इसमें यह ध्यान रखा जाता है कि अनूदित पाठ 'समान प्रभाव' वाला तो हो, किंतु वह अनुवाद न लगे; लक्ष्य भाषा की ही मूल रचना प्रतीत हो। साहित्यानुवाद और विशेष तौर पर काव्यानुवाद को प्रभावधर्मी अनुवाद की श्रेणी में गिना जाता है।

यहाँ यह उल्लेख करना भी अनुचित न होगा कि प्रभावधर्मी आयाम वाले अनुवाद में अनुवादक को अनूदित रचना में मूल पाठ के समान प्रभाव को लाने के लिए पाठ से बाहर जाने की छूट होती है। वह मूल में अपनी ओर से जोड़ने–घटाने का कार्य करने के लिए स्वतंत्र होता है। अनुवादक की यह स्वतंत्रता अनूदित कृति को नया सृजित रूप प्रदान कर देती है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में तो प्रभावधर्मी अनुवाद का आश्रय लेना सहज रूप से स्वीकार्य होता है, किंतु ज्ञानात्मक एवं सूचना प्रधान साहित्य के अनुवाद में प्रभावधर्मी अनुवाद कारगर नहीं होता।

1.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपको अनुवाद की परिभाषा और अर्थ के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इस संदर्भ में आपको 'अनुवाद' और 'Translation' शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ से परिचित कराया गया है। इस बारे में अध्ययन करने के बाद आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि इन दोनों शब्दों की व्युत्पत्तियाँ किस प्रकार हुई हैं। इन शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ यह सिद्ध करते हैं कि इनके मूल में एक ही भाव है – एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना।

पारिभाषिक अर्थ में 'अनुवाद ' शब्द की विकास–यात्रा से पता चलता है कि यह शब्द अपने अस्तित्व में तो प्राचीन समय से है; इसे व्यवहार में लाया जाता था। किंतु आज जिस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, पहले उसका वह अर्थ नहीं था। आज यह अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' शब्द के समतुल्य प्रयुक्त किया जाता है और जिसका सामान्य अर्थ एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कह देना है। देश–विदेश के अनेक अनुवाद–चिंतकों और साहित्यकार–अनुवादकों ने अपने–अपने नजरिए से अनुवाद को परिभाषित किया है। अनुवाद के संबंध में व्यक्त ये विचार–परिभाषाएँ बताती हैं कि अनुवाद एक गहन विषय है।

इस इकाई में आपको यह बताया गया है कि जब हम अनुवाद को एक भाषा पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा के पाठ में प्रतिस्थापित करने वाला कार्य–व्यापार कहते हैं तो वह वास्तव में अनुवाद के सीमित संदर्भ को व्यक्त करता है। इसे 'अंतर–भाषिक अनुवाद' कहा जाता है। यही वास्तविक अनुवाद है, लेकिन अनुवाद का व्यापक संदर्भ भी है। अनुवाद के इस संदर्भ को 'अंतर–भाषिक अनुवाद' के साथ–साथ 'अंतःभाषिक अनुवाद' और 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' से भी जोड़कर देखा जाता है। 'अंतःभाषिक अनुवाद' में हम एक ही भाषा की दो बोलियों, शैलियों, साहित्यिक विधाओं के अनुवाद (जैसे कविता से कहानी में अनुवाद) को शामिल किया जाता है। 'अंतर–प्रतीकात्मक अनुवाद' का संबंध दो भिन्न माध्यमों या प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच घटित होने वाले अनुवाद से है। इनमें एक से भाषिक माध्यम होता है और दूसरा दृश्य–चित्र आदि का माध्यम।

आधुनिक संदर्भ में अनुवाद का वास्तविक क्षेत्र 'अंतर–भाषिक अनुवाद' ही है, जो एक भाषा पाठ में व्यक्त संदेश को दूसरी भाषा के पाठ में प्रतिस्थापित करने से संबंधित है। लेकिन यह भी दो आयाम लिए हुए होता है – पाठधर्मी अनुवाद, और प्रभावधर्मी अनुवाद। पाठधर्मी अनुवाद मूल पाठ की संरचना और बुनावट को ध्यान में रखकर किया जाता है, जबकि प्रभावधर्मी अनुवाद में यह ध्यान रखा जाता है कि लक्ष्य भाषा पाठकों पर वही प्रभाव पैदा किया जाए जो स्रोत भाषा पाठ ने अपने पाठकों पर छोड़ा है। इसीलिए कहा जाता है कि सूचना–प्रधान और तकनीकी साहित्य आदि का पाठधर्मी अनुवाद उपयोगी होता है और सृजनात्मक साहित्य (विशेष तौर पर कविता) का प्रभावधर्मी अनुवाद सार्थक होता है।

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. पारिभाषिक अर्थ में 'अनुवाद' शब्द की विकास–यात्रा पर प्रकाश डालिए।
3. अनुवाद की परिभाषाओं के आधार पर अनुवाद संबंधी मतों का विवेचन कीजिए।
4. 'अनुवाद' और 'Translation' शब्द का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
5. स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से आप क्या समझते हैं?
6. अनुवाद के व्यापक और सीमित संदर्भ से आप क्या समझते हैं?

1.10 उपयोगी पुस्तकें

- गोपीनाथन, डॉ. जी, 1985, अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- डॉ. नगेंद्र (संपा), 1993, अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्रीवास्तव, डॉ.रवींद्रनाथ एवं गोस्वामी, डॉ. कृष्ण कुमार, 1985, अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, आलेख प्रकाशन, दिल्ली
- टंडन, डॉ.पूरनचंद, 1998, अनुवाद–साधना, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली
- टंडन, डॉ.पूरनचंद, सेठी, डॉ. हरीश कुमार सेठी, 1998, अनुवाद के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998.

- गोस्वामी, प्रो. कृष्ण कुमार, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- पाँडे, प्रो. हेमचंद्र, 2008, अनुवादशास्त्र : व्यवहार से सिद्धांत की ओर, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, प्रो. अवधेश कुमार, संपा. हिंदी अनुवाद विमर्श (भाग 1 और 2), 2019, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2019.
- अग्रवाल, डॉ. कुसुम, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, 1999, साहित्य सहकार, दिल्ली
- गुप्ता, नीता एवं टंडन, डॉ.पूरनचंद, संपा. अनुवाद शतक (भाग 1 और 2), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, 2001.
- सिंहल, डॉ. सुरेश, 2006, अनुवाद : संवेदना और सरोकार, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली
- गुप्त, अवधेश मोहन, 1992, अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं सिद्धि, राष्ट्रभाषा प्रकाशन, दिल्ली
- Tytler, Alexander Fraser, 1790, Essay on the Principles of Translation, Neill & Co, Edinburg, UK
- Bassnett, Susan & McGuire, Translation Studies, Methuen, London, 1980.
- Rao, R. Raghunath, The Art of Translation – A Critical Study, 1990, Bhartiya Anuvad Parishad, New Delhi